गुर्जरों के पतन के कारण

बाबू राम पँवार
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राष्ट्रीय वीर गुर्जर महासभा
मो.न. 8958901114

राजपूत : यह शब्द रचना की दृष्टि से बहुत सरल है। इसका अर्थ है राजा का पूत। श्री ईश्वरी प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'मुस्लिम रूल इन इंडिया' पृष्ठ - 26 में लिखा है कि सामान्य भाषा में राजस्थान में राजपूत शब्द राजा, जागींरदार या राव के अवैध पुत्र के लिये प्रयुक्त होता है। श्री कालका रंजन कानूनगो ने अपनी पुस्तक 'स्ट्डीज इन राजपूत हिस्ट्री' में लिखा है "राजपूतों की उत्पत्ति के प्रश्न की ओर झांकना इतना महत्वपूर्ण नहीं है। तलवार ही उनकी सबसे अच्छी वंशावली है।" (देखिए पृष्ठ 96) उन्होंने इस विषय में डा0 अशोक कुमार मजूमदार डी- फिल- (कलकता) का संदर्भ दिया है। डा0 कुमार लिखते हैं, "कभी-2 यह माना जाता है कि राजपूत शब्द राजपुत्र से बना है। बहुत कम संस्कृत ग्रंथ तथा शिलालेख इस तथ्य का अनुमोदन करते हैं। यह कहना कठिन है कि इस शब्द का अर्थ क्या है तथा इसका प्रयोग कैसे प्रारम्भ हुआ। ऐसा लगता है कि 12वीं सदी के बाद कुछ क्षत्रिय वंश राजपूत या राजपूत्र कहलाने लगे।" (देखिए पाठ टिप्पणी पृष्ठ 96-97)

श्री कानूनगो कहते हैं, राजपूत क्या है? संस्कृत तथा पश्चिमी बंगाल की बोली की तरह राजपूताना में राजपूत शब्द का अर्थ राज परिवार के वंशक्रम से कुछ हटकर है। बंगाल का राजपुत्र किसी राज परिवार से होना आवश्यक नहीं, उसका सुंदर चेहरा तथा साफ रंग होना ही पर्याप्त है। (देखिए पृष्ठ 98)। 'प्रसार स्मृति' के अनुसार क्षत्रिय की शूद्र पत्नी से जन्मा पुत्र राजपुत कहलाता है (देखिए के0यू0पी0)। 'मोनियर एन्ड मोनियर' शब्दकोष के अनुसार वैश्य पत्नी से किसी क्षत्रिय का पुत्र राजपूत होता है। 1192 ई0 तथा 1200 ई- के दौरान आधुनिक दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा गुजरात काठियावाड़ को विदेशी मुस्लिम हमलावरों ने पूर्णत: नष्ट कर दिया था। शासकों के परिवार से बचे खुचे लोग, प्रशासक, राव, मंत्री, पुरोहित तथा अन्य सम्बन्धित लोग इन क्षेत्रों से भाग गये। बाद में उन राजाओं के राजपुत्रों में इस खाली भूमि को हथियाने की होड़ प्रारम्भ हुई। यह दौड़ 1300 ई0 में शेष किलों पर भी विदेशी मुस्लिमों के कब्जे के बाद अधिक तेज हो गई।

रांघड़ :- इसका अर्थ है एक औरत का पुत्र (रान-स्त्री, घड़ना-बनाना) अनघड़ का अर्थ बिना बनाया हुआ असभ्य है, सुघड़ - अच्छी तरह बनाया हुआ, सभ्य व्यक्ति है, मनघड़ का अर्थ मन द्वारा कल्पित है। गोला :- रखैल के पुत्र को गोला या दोगला कहते हैं।

बसी :- इसका अर्थ है बसने वाला। 4 से 6 तक की उपरोक्त श्रेणियों के पुत्रों को राजा राज्यधिकार न देकर कुछ भूमि उनके बसने व निर्वाह के लिए दे देता था। ऐसे पुत्रों को बसी कहते थे। राजपुत, गोला तथा बसी शब्द समानार्थक है।

राजा या राव अपने पुत्रों से अधिक अपने राजपुत्रों पर अधिक विश्वास करते थे। राजपुत अधिक विश्वासपात्र व अच्छे सेवक माने जाते थे। वे इन गुणों के लिए गर्व करते थे। विजयसिंह राठौर मेवाड़ के राणा जगतसिंह का कृतज्ञ था। अत: उसने राणा को एक पत्र लिखा, "यहां सब ठीक हैं। आपकी मित्रता तथा आशीर्वाद ही मेरा सम्बल है। आपने मुझे पूरा राजपूत बना दिया है। मैं कभी आपकी सेवा करने में कोताही न करूंगा।" (देखिए ए ए आर पृष्ठ 334 एफ एन 2)

भादेर का हमीर चूडावत राणा के विरूद्ध था। अंग्रेज प्रतिनिधि ने राणा की सहायता की। भादेर के किले पर राणा का झण्डा लहरवा दिया। तब हमीर कर्नल टाड के पास गया। वह लिखता है :- वह मेरे पास नाश्ते के बाद आया, उसने मुझे अपना अच्छा मित्र बनाया। उसने अपनी तलवार की शपथ ली कि वह मेरा राजपूत है तथा वह भविष्य में आज्ञाकारी व विश्वासपात्र बना रहेगा।" (देखिए ए ए आर पृष्ठ 389-390)

12वीं तथा 13वीं सदी में राजपूत कोई जाति या समूह नहीं था तथा वें अपनी बेटियाँ भीलों तथा मीणों को देते थे। जब राजपूत संगठित हो गए तथा एक निश्चित जाति के रूप में आ गये, विदेशी मुस्लिमों ने उन्हें जमींदार तथा छोटे-छोटे राज्यों का राजा बना दिय। तब भी राजपूत लोग इन जातियों के बड़ी उम्र के लोगों को फूफा तथा छोटी उम्र वालों को भानजा कहकर पुकारते थे। (देखिए एस आर एच पृष्ठ 64) उपरोक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि राजपुत, रांघड, गोला तथा बसी शब्द समानार्थक हैं। धीरे-धीरे ये सब राजपुत जाति के रूप में संग़ठित हो गये।

भूमिया या भूमला :- इस शब्द का अर्थ भूस्वामी या अपनी भूमि को जोतने वाला। इसके लिए फारसी शब्द जमींदार है। वह सरकार को थोड़ा भूमिकर देता है तथा पीढी दर पीढी बिना नजराना दिए इसका अधिकार बनाए रखता है। चौदहवीं सदी के अंत में चित्तौड़ का राणा मन्डोर के रायमल राठौर की बेटी को ब्याहने गया तथा दहेज में दस हजार जाट माँगे। माँग मान ली गई। जाटों ने कहा कि भले ही आप हमें मार दें परंतु हम अपनी भूमि नहीं छोडेगें तथा मेवाड़ के राणा के मजदूर बनकर नहीं जाएंगे। राणा ने उन्हें सम्पत्ति का अधिकार देने का वायदा किया। इस लाभ पर जाट वहां चले गए। उन जाटों के वंशज आज भी बेरीस तथा बुनास नदियों के आसपास रह रहे हैं। (देखिए ए ए आर पृष्ठ 394) बसोया :- अकाल या युद्ध के कारण जनता एक स्थान से दूसरे स्थान पर चली जाती थी। बडे- बडे जमींदार बाहर से आने वाले लोगों को बसाते थे इन्ही को बसोया (बसने वाले) कहते थे। इस प्रकार के लोग भूमि खरीदकर अपनी सामाजिक स्थिति सुधार लेते थे परन्तु गोला, बसी अपनी सामाजिक स्थिति कभी नहीं सुधार सकता था।

ग्रासिया :- ग्रास का अर्थ है ग्रांट । तथा ग्रासिया का अर्थ है ग्रांट लेने वाला। ग्रासिया राजा की घर तथा बाहर सेवा करते थे। ग्रांट का समय–समय पर नवीनीकरण किया जाता था।

चौधरी :- गांव या जाति का मुखिया।

मुखिया:- जाति का विशिष्ट व्यक्ति।

ठाकुर :- एक पूरे गांव या आफिस का स्वामी। जब वह ठाकुर नहीं रहता था तो भूमिया बन जाता था। कोई भूमिया नीचे या ऊँचे वर्ग का नहीं था। राजा की दुर्दिन आने पर भूमिया बन जाता था। पटेल :- भूमिपति। एक पट्टी का भूमिकर एकत्र कर सरकार को देने वाला। पटवारी उसका क्लर्क होता था।

गोसाई या गोस्वामी :- इंद्रियों पर संयम करने वाला। वें शिव भक्त थे। पहले ब्राह्मण, गुर्जर तथा बाद में राजपूत गोसाई होते थे। उनके माथे पर अर्धचंद अंकित होता था। उनके बालों का जूड़ा बँधा होता था तथा उनके सिर पर मुकुट होता था तथा जूड़े पर कमल की माला लिपटी रहती थीं। वें शरीर पर राख भी मल लेते थे तथा नांरगी रंग के कपड़े पहनते थे। वे अपने मुर्दों को आसन की मुद्रा से गाड़ते थे तथा ऊपर शंक्वाकार की समाधि बनाते थे। उनमें से कुछ कुँवारे रहते थे। वें बहुत धनी व्यक्ति होते थे। उन्होंने मराठों को अपने बन्दी बनाए गए लोगों को छुड़ाने के लिए भारी धन दिया। एक बार राणा की ओर से उन्होंने धन दिया। राणा एक पैसा भी देने की स्थिति में नहीं था। वें हजारों कनपाड़ा जोगियों को लड़ने के लिए इक्ट्ठा कर सकते थे।

चारण:- चारण इतिहास लिखता है।

भाट:- भाट वंशावली लिखता है।

मिरांसी या मीरसी :- जो किसी परिवार की अंदरूनी बातों को जानता है उसे उस परिवार का मीरासी कहते थे। वह अपने यजमान की प्रशंसा करके उससे भेंट लेता था तथा उसके विरोधी की निंदा करता था। वह लोक भाषा में माहिर होता था। कहीं कहीं गुर्जरों व राजपूतों के भाट व मिरासी एक ही हैं। जब मिरासी गुर्जरों के पास जाता था तो गुर्जरों की प्रशंसा करता था तथा गुर्जरों को सबसे बड़ी जाति बताता था। इसी प्रकार जब वह राजपूतों के पास जाता था तो उन्हीं शब्दों को राजपूत के लिए प्रयोग करता था। श्री कानूनगो कहते हैं, " मिरासी वह है जो यजमान से अच्छी दक्षिणा लेने के लिए उसकी झूठी सच्ची प्रशंसा करता है।"

सूरत:- बांदी का पुत्र।

गोपी:- चरागाह की सुंदर स्त्री (देखिए ए0 ए0 आर0, पृष्ठ 429-433-434)

बन्दा:- फारसी में बंधक व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द।

बांदी:- राजा या रानी की सेविका।

सामान्यत: राजा अपने दूसरे पुत्रों से अपने राजपूतों पर अधिक विश्वास करते थे। राजा, प्रमुख, राव, तथा ठाकुरों के रक्षक दल में राजपूत ही रहते थे। उनके निवास स्थान का पहरा भी वही देते थे। उन्हें प्रणाम करने तथा बड़ों के साथ बात करने का व्यवहार सिखाया जाता था। अत: उन्हें हमलावरों के पास जाने तथा उनसे बात करने में हिचकिचाहट नहीं होती थी। एक गोला कुतुबद्दीन ऐबक के पास गया तथा अजमेर को भारी राजकर पर ले लिया। मालवा के एक राजपूत भोज ने अलाउद्दीन खिलजी को गर्मी की मौसम में फसल कटने से पहले मारवाड़ पर हमला करने की सलाह दी। अलाउद्दीन ने उसे जागरा की जागीर दे दी। मालदेव, सुलतान के पास गया, घेराबंदी के समय उसकी सहायता की तथा चित्तौड़ की गद्दी

पर सुलतान ने मालदेव को बिठा दिया तथा एक बड़ी जागीर भी दे दी। राजपूत जानते थे कि भूमि ही सम्मान व प्रतिष्ठा का स्रोत है। पुराना गुर्जर प्रशासन समाप्त हो गया था जिसमें जाट, डोगरा, मीणा, मेव, गोंड, भील, सारजस, सेरजाऊ, अहीर, मेड़, ओड़, तथा मेहरा आदि भूमिया थे। भूमिहीन राजपूतों ने उन्हें हर अवैध व अनैतिक साधन से उनकी भूमि से वंचित कर दिया। गुजरात सुलतान का प्रांत बन गया अत: सौराष्ट्र (सोराठ) के राजपूतों को वहाँ कोई अवसर नहीं दिखता था। वें मंडोर के प्रतिहार शासक के पास पहुँच गए जो इस रेगिस्तान में अपना सर छुपाए बैठा था। सौराष्ट्र या सोराठ के यें राजपूत राठौर कहलाते थे। मंडोर शासक ने उन्हें शरण दी परन्तु रिनमल राठौर ने उसे रात में मार दिया। एक परमार प्रमुख आबू पर बैठा था, राजपूतों ने उसके छ: पुत्रों को अपनी बेटियाँ देने के लिए कहा। उसने बहुत सावधानी से दुल्हन आबू भेजने को कहा। राठौर राजपूत नवयुवक दुल्हनों के भेष में पहुँच गए तथा आबू के परमारों को मारकर उस पर कब्जा कर लिया। राजपूतों ने अपनी बेटियाँ मीणों तथा भीलों को भी दी तथा उपयुक्त समय आने पर उनको मार दिया व उनकी भूमि पर अपना अधिकार कर लिया। 13वीं सदी में मीणों व भीलों का बूंदी से ढुन्ढर तक के सारे क्षेत्र पर अधिकार था। राजपूत, मीणा तथा मेदों के उस समय वैवाहिक सम्बन्ध होते थे। बूंदी मीणाओं का केंद्र था जो 1243 ई0 में एक हाड़ा राजपुत समरसिंह द्वारा अपने अधिकार में ले लिया गया। कोटा भीलों का केंद्र था। देव नाम का एक राजपूत मीणाओं के प्रमुख को अपनी बेटी देने को तैयार हो गया था। जब मीणा बारात लेकर आए, उन्हें अफीम व शराब का सेवन कराकर धुत्त कर दिया तथा राजपूतों द्वारा मार दिया गया। देव के पोते जेता ने भीलों के प्रमुख राव कोटिया से मित्रता कर लीं तथा एक दावत में बुलाकर उसे मार दिया (देखिए एस आर एच पृष्ठ-62) बीकानेर, बीका तथा नेर नाम के दो जाट बंधुओं ने बसाया था। यह जाटों का केंद्र था। राठौर राजपूरों ने उनको बीकानेर से निकाल दिया। यें जाट रिवाड़ी (ऊँटों से किराए पर माल ढ़ोने वाले) बन गए। ताकतपुर के राव एक जाट को भट्टी राजपूतों ने निकालकर अपना कब्जा कर लिया तथा जैसलमेर बसा लिया। भूमि के लिए राजपूत मुसलमान बन गए। कायमखानी तथा लालखानी राजपूत इसके उदाहरण हैं। ब्रिटिशकाल में तथा आज भी इतिहासकार जयपुर, जैसलमेर, किशनगढ़, बीकानेर, जोधपुर, कोटा व बूंदी आदि राजपूतों के अनेक विशाल व भव्य नगर देखकर व्यर्थ ही यह आश्चर्य करते हैं कि उन्होंने विदेशी मुस्लिमों को अपनी बेटियाँ क्यों दी। राजपूत के लिए यह सामान्य बात थी कि वह अपनी बेटी किसी भी छोटी अथवा बड़ी जाति के व्यक्ति को दे। अत: राजपूतों की दृष्टि से यह उनके लिए गौरव की बात थी कि विदेशी मुस्लिम उनकी बेटी को स्वीकार करते थे।

राजाओं प्रमुखों, रावों, ठाकुरों, बसोयाओं तथा भूमलाओं के राजपूत तब एक दूसरे के सम्पर्क में आए जब गुर्जर देश में अराजकता फैल गई। पहले वें अपने परिवार या गोत्र के आधार पर संगठित हुए जैसे चौहानों के राजपूत, चौहान राजपूत बन गए। सोलंकियों के राजपूत, सोलंकी राजपूत बन गए। यें राजपूत फिर हिंदू कानूनों के अनुसार एक दूसरे से शादी- विवाह करने लगे तथा मुगलकाल में यह एक सुदृढ़ जाति बन गई। मुसीबत में राजपूत, मीणाओं व भीलों को फूफा व भानजा कहते थे तथा उनकी कठिनाई का लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा कर लेते थे। राजपूत स्वयं भी एक दूसरे से लड़ते रहते थे। यदि वें सब संगठित होते, तो इतिहास में उनका अच्छा योगदान रहता, न कि विदेशी लोगों के मात्र पहरेदार बनकर

राष्ट्र की अस्मिता को मिट्टी में मिलाते। राजपूत एक दूसरे के विरूद्ध प्रतिशोध व बदले की भावना के लिए प्रसिद्ध हो गये। राजपूतों का पूरा इतिहास जर, जोरू, व जमीन के लिए एक दूसरे के विरूद्ध रक्तपात का लेखा जोखा है। विदेशी मुस्लिमों ने राजपूतों के लिए भी यही किया परंतु वहाँ राजपूत अपनी अस्मिता व गौरव को खोकर उनके अनुसार बन जाते थे (देखिए एसआरएच पृष्ठ-74)

राजपूत अपने मृत पिता की सम्पत्ति में कोई अधिकार नहीं रखते थे। शासक वर्ग के कत्लेआम के पश्चात जब अराजकता फैल गई तो राजपूतों ने अपने पिताओं की खाली भूमि पर कब्जा कर लिया। वें एक कदम और आगे बढ़ गए तथा उन्होंने दूसरे भूमियाओं को उनकी भूमि से वंछित कर दिया। एक गोला एक गोली से ही विवाह करता था। मजबूरी में राजपूत मीणा तथा भील आदि से भी विवाह सम्बंध बना लेते थे। जब राजपूतों को विदेशी मुस्लिमों की ओर से ईनाम में सनद या ग्रांट मिलती थी, राजपूत विदेशी मुस्लिमों की भांति छोटी जाति के लोगों की जबरदस्ती लड़कियाँ भी लेते थे। उनके पुत्र दास कहलाते थे। राजपूतों के लिए दासों की संख्या ही गौरव का चिन्ह माना जाता था। (देखिए ए ए आर)। इतना ही नहीं औरतों के लिए राजपूत एक दूसरे से भी झगड़ते थे। जसवंतसिन्ह राठौर की 64 तथा बुद्धहाड़ा की 84 पत्नियाँ थी। एक कहावत है, "सूई कहे छेद करूँ, पहले छेद कराए।"

हिंदू सूरज चित्तौड़ के राणा भी पीछे नहीं हैं। राणा लाक्खा 1373 ई0 में गद्दी पर बैठा। उसकी कई पत्नियाँ थी। जिनके अनेक पुत्र हुए। उनके कई पोते थे। एक दिन जब वह बूढ़ा हो गया तो मुंडोर के रिनमल ने अपनी बेटी को उसके पुत्र चौंडा के साथ सगाई के रूप में नारियल भेजा। राणा लाक्खा ने अपनी सफेद मूंछों पर हाथ फेरते हुए उस लड़की को अपने लिए चाहा। जब चौंडा ने यह सुना तो उसने तिरस्कारपूर्वक अपने पिता की ओर देखते हुए तथा कठोर शब्दों का प्रयोग करते हुए इस सगाई को ठुकरा दिया। इस प्रकार बूढ़े लाक्खा से वह लड़की ब्याह दी गई।

राणा सांगा के दादा सिसोदिया कुम्भा झालावत के राजा की बेटी को जबरदस्ती उठा ले गया जिसकी मुंडोर के राजा से सगाई कर रखी थी। राणा रायमल 1474 ई0 में गद्दी पर बैठ। उसके पुत्र जयमल ने ठोडा के सोलंकी राजा राव सूरतन की पुत्री को उठाना चाहा, सोलंकी ने उसी स्थान पर जयमल को मार दिया। एक भट्टी राजपूत रनिंगदेव, पूगल का राजा था तथा जैसलमेर का सामंत था। उसका उत्तराधिकारी सादू एक लूटेरा व पशु छीनने वाला था। वह सिंधु तक लूटमार करता था। एक बार पकड़े गए ऊँटों तथा घोड़ों के काफिले के साथ वह औरंट में मोहिल के राजा माणिक राव के घर ठहरा। मोहिल के राजा की एक बेटी कर्म देवी थी जिसकी अरन्य कमल से सगाई हो रही थी। यह अरन्य कमल मुंडोर का उत्तराधिकारी राठौर था। रेगिस्तान के आंतक सादू ने अपने माता-पिता को भी इस विवाह के लिए मना लिया। यह कहा जाता है कि कर्म देवी भी उससे प्यार करती थी।

दो हजार भट्टी दूल्हे के साथ आए। विवाह के पश्चात दूल्हन के भाई मेघराज के साथ 50 हजार जवान और भट्टियों के साथ गए। चौंदन में चार हजार राठौरों ने उन्हें रोका तथा लड़ाई शुरू हो गई। सादू व कमल आमने सामने हो गए। सादू ने राठौर की गर्दन पर वार किया। बहुत शीघ्रता करके कमल ने अपनी तलवार से सादू के सिर पर चोट की। दोनों भूमि पर गिर पड़े। कर्म देवी ने यह देखकर कटार से अपनी जान ले ली।

इस प्रकार युद्ध समाप्त हो हुआ तथा दोनों अपने-2 प्रमुख का घायल शरीर उठा ले गए। यह घटना 1405 ई0 की है।

सादू भट्टी मौके पर ही मर गया। कमल राठौर बेहोश हुआ था, उसकी चिकित्सा भी मुंडोर में हुई परंतु कुछ दिन के बाद उसके घाव फिर खुल गए तथा वह मर गया। सादू का छः मासा तथा कमल का द्वाद्शाह एक ही दिन मनाए गए।

राणा सांगा का पुत्र रतन एक बार आमेर गया तथा पृथ्वीराज की बेटी से विवाह करने के उपरांत कुछ दिन वहाँ ठहरा। पृथ्वीराज आमेर का कछवाहा शासक था। विवाह को रतन के गद्दी पर बैठने तक गोपनीय रखना था। रतन 1530 ई0 में गद्दी पर बैठा तथा बूँदी के हाड़ा राजा सूरजमल की बहिन से विवाह किया। इस तथ्य को न जानते हुए बूँदी के हाड़ा ने उसी कछवाहा की लड़की को माँगा तथा उसका विवाह हो गया। वह उसको लेकर राजधानी आ गया। दुल्हन ने भी इंकार नहीं किया तथा अपने गुप्त विवाह को प्रकट न किया। बसंत के उत्सव में रतन व सूरजमल आमने सामने हो गए तथा एक दूसरे के हथियार से मर गए। बूँदी के भाटों ने चित्तौड़ की दुल्हन का पाणिग्रहण करने की हिम्मत करने के लिए अपने राजा की बहुत प्रशन्सा की है। यह घटना 1535 ई0 की है। राजपूतों के हजारों कुकृत्यों के ये थोड़े से उदाहरण हैं। राजपूत हमेशा अपनी गौरव गरिमा के भूखे रहे हैं। राजपूतों ने अपनी बेटियाँ मुस्लिम शासकों को इसलिए दी ताकि लोग समझे कि उनके सम्बंध कितने ऊँचे लोगों से हैं। कोई भी अमीर या गरीब राजपूत ऊँची उपाधि प्राप्त करना चाहता था। वें अपने आपको अनिवार्य रूप से राजा, राव, या ठाकुर कहते थे परंतु मुस्लिम लोग कभी उन्हें इन उपाधियों से नहीं पुकारते थे। आईन-ए-अकबरी में राजपूत जागीरदारों की सूची दी है। केवल आमेर के मानसिंह को राजा मानसिंह तथा भाट बीरबल को राजा बीरबल लिखा है। अन्य किसी राजपूत के साथ कोई उपाधि नहीं लगाई है। फरिश्ता ने केवल प्रताप को ही राणा प्रताप लिखा है। राणा शब्द का अर्थ स्वतंत्रता सेनानी है। दुनियाँ के इतिहास में बेजोड़ वीर राणा प्रताप को छोड़कर राजपूतों में कोई राणा नहीं हुआ। वह अकबर के विरूद्ध पच्चीस साल लड़ा तथा मेवाड़ को स्वतंत्र कराने में सफल हुआ। कुछ राजपूत कुँवर या कुमार शब्द का प्रयोग करते थे, परंतु राजपूत तथा कुमार शब्द विपरीतार्थक है। जोधाबाई का भतीजा मानसिंह भी मिर्जा राजा कहलाता था। अकबर के समय में राजपूत राजनैतिक सेवाओं में ऊँचे पदों तक पहुँच गए थे। अतः राजपूतों को अपने स्वयं के इतिहास की आवश्यकता का अनुभव हुआ। चौहानों के अंतिम गढ़ रण्थम्भोर के किले के 1301 ई0 में पतन के पश्चात तीन पुस्तकें लिखी गई थी। पृथ्वीराज रासों चौहानों के भाट चंद्रबरदाई द्वारा तब की राजस्थानी भाषा में लिखा गया। यहा दावा किया कि लेखक पृथ्वीराज का समकालीन था परंतु किसी इतिहासकार ने यह बात स्वीकार न की। वास्तव में यह पुस्तक 15वीं सदी या 14वीं सदी में लिखी गई। लेखक अजमेर क्षेत्र का रहने वाला था। वह पहला व्यक्ति था जिसने लिखा है कि परमार, प्रतिहार, सोलंकी, व चौहान अग्निकुंड से उत्पन्न हुए हैं। उसकी पुस्तक पृथ्वीराज के विवरण पर समाप्त होती है। हमीर चौहान द्वारा 1301 ई0 में रण्थम्भोर को बचाने के वीरतापूर्ण प्रयास ने नयाचंद सूरी को 1336 में 'हमीर रासो' व 'हमीर महाकाव्यम' लिखने के लिए प्रेरित किया। इन सब पुस्तकों में राजपूत शब्द नहीं है। राजाओं के लिए

क्षत्रिय शब्द का प्रयोग हुआ है। 36 क्षत्रिय परिवारों में चंदर बरदाई ने गुरूअर भी लिखा है। हर इतिहासकार ने माना है कि उस समय की दिंगल भाषा में गुरअर गुर्जर को ही कहा जाता है। हमीर महाकाव्य में चौहानों को अग्निकुंड से उत्पन्न हुआ नहीं अपितु प्राचीन काल के इक्ष्वांकु के वंशज सूर्यवन्शी लिखा है। हमीर को राणा कहा जाता था। चालूक्यों के एक परिवार वघेलाओं के अन्हिलवाड़ा के पतन के पश्चात तत्कालीन गुजराती भाषा में चार पुस्तकें लिखी गई। 1- मेरू तंग द्वारा प्रबन्ध चिंतामणि 2- 1308 ई0 में जिनप्रभा सूरी द्वारा विविध तीर्थ क्ल्पतरू 3- धर्म अरन्य 4- पद्मनाथ द्वारा कन्हड़ प्रबंध। जिनप्रभा सूरी ने लिखा, "1299 ई0 में सुल्तान अलाउद्दीन ने दिल्ली से उलग खान को अन्हिलवाड़ा के गुर्जर राजा को नष्ट करने के लिए भेजा" (देखिए वी टी के 30) धर्म अरन्य कहता है, "गौरवशाली महाराजा कर्ण राज कर रहा था जब इसे अपनी जाति और देश पर कलंक, नीच, पापी गौरवहीन मंत्री माधव ने क्षत्रियों का शासन समाप्त कर दिया, तथा बर्बर व जंगली लोगों का राज्य स्थापित करवा दिया" (देखिए पृष्ठ 68-69)। 1450 में पद्मनाथ कहता है, " उस समय गुर्जर राजा सारंग राज्य कर रहा था जब माधव ने यह पापकर्म प्रारम्भ किया। उसने कसम खाई थी कि वह जब तक गुजरात को बर्बाद करने के लिए तुर्कों को नहीं बुला देगा तब तक भोजन नहीं करेगा।" (देखिए कन्हड़ प्रबंध 13-15)। इसके अतिरिक्त जिनप्रभा सूरी लिखता है, " अन्यायी गजनवी ने सोमनाथ पर हमला किया तथा 1081 वि0 सं0 तदनुसार 1024 ई0 में गुर्जरों को नष्ट कर दिया।" प्रबंधो में कर्ण को राणा कहा गया है तथा 1209 ई0 में इस परिवार का संस्थापक लावन प्रसाद महाराणक था (देखिए जी जी भाग -2 पृष्ठ 387)। 1238 ई0 में भीमदेव चालूक्य ने वेदगर्भ राशि के लिए अनुदान स्वीकृत किया। वेदगर्भ राशि राणा विरम द्वारा निर्मित्त दो मंदिरों का प्रभारी था। (देखिए जी जी भाग -2 पृष्ठ 383-387)। इस अनुदान में लावन प्रसाद तथा उसके पुत्र विर्धवाल को महामंडलेश्वर महाराणक कहा गया है। (देखिए आबू शिलालेख सं-2 ई0आई0-8 पृष्ठ 219)। सोमनाथ पट्टन में एक देवनागरी शिलालेख में लिखा है, "चौटक वंश के कर्ण के दादा अर्जुन देव ने कुछ मुख्य -2 व्यक्तियों की उपस्थिति में बाजार का साप्ताहिक लाभ मंदिरों के रख रखाव तथा मस्जिद के निर्माण के लिए दे दिया। उसमें लिखे गए हिंदू तथा मुस्लिम नामों में एक चावड़ा सेनापति रणक श्री सोमेश्वर देव भी हैं।" (देखिए आई ए भाग-2 पृष्ठ 241 से 245 ए ए आर पृष्ठ 627 जी जी पृष्ठ 397-398)। विर्धवाल का पुत्र विसल देव महाराणक था (देखिए जी जी भाग -2 पृष्ठ 394) इन सभी गुर्जर राजाओं ने मुस्लिम हमलावरों का सैकड़ों वर्ष मुकाबला किया तथा 1300 ई0 के लगभग इन सबका अलाउद्दीन खिलजी ने सफाया कर दिया। तब सुलतानों के जागीरदारों के रूप में राजपूत इतिहास में आए परंतु मेवाड़ के राजपूत सुलतानों के आगे नहीं झूके। एक सोलंकी गुर्जर ने मेवाड़ जाकर राणा नगर बसाया। यह वहीं स्थान था जहाँ देव नारायण महागाथा की नायिका जयमती का जन्म हुआ। तेरहवीं सदी में अजमेर से आए चौहानों ने यमुना के किनारे कैराना व टपराना बसाए। कैराना के संस्थापक के एक पुत्र कुम्भा ने खंदरावली गाँव बसाया। उसके एक पोते ने राणा माजरा बसाया जो कि यमुना का बहाव बदलने के कारण अब हरियाणा के पानीपत जिले में है। एक चौहान गुर्जर दीपराज ने मुंडराणा (मुंडलाना) बसाया जो अब हरिद्वार जिले में है। इस प्रकार 1192 ई0 में तरावड़ी में चौहानों की तथा 1197 ई0 में अरावली पर्वतों की तलहटी में सोलंकियों की पराजय के पश्चात गुर्जर 1300 ई0 तक सुलतानों के विरूद्ध संघर्ष

करते रहे। इन एक सौ वर्षों में गुर्जर राणा या स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जाने जाते रहे। उपरोक्त विवरण से निम्न निष्कर्ष निकले हैं।

1- राव, रावत, ठाकुर, पटेल, चौधरी व मुखिया आदि उपाधियाँ सभी जातियों के लिए समान थी। गुर्जर शासन पारिवारिक प्रणाली पर आधारित था। गुर्जर शासक के संरक्षण में सभी जातियों के पारिवारिक छोटे-2 राजा स्वतंत्र थे। यहाँ तक कि भील, मीणा व मेद भी राव थे। राव कोटिया भील थे। बूंदी में मीणा सरदार राव कहलाता था। जब वें राजपूतों के कहने पर ही उनकी लड़कियों से विवाह करने आए तो दोनों राजपूतों द्वारा मार दिये गए। 17वीं सदी में नैनसी लिखता है, "महेशर पहाड़ी व परगना जुर्रा का स्वामी राणा का विश्वासपात्र सामन्त है। उसके पूर्वजों की उपाधि रावत थी। इस समय इसका भील प्रमुख नरसिंह दास है। (देखिए एस आर एच पृष्ठ 63)।" मेड़ या मेड बहुत निडर व साहसी थे। 1779 ई0 में उनके राव ने भोपाल सिंह राजपूत को मार दिया तथा अलनिया का अधिकार उससे छीन लिया (देखिए अलनियावास का शिलालेख 1835 वि0सं0 या 1778 ई0)।

2- यह स्पष्ट है कि संस्कृत शब्द गुर्जर उपमहाद्वीप की क्षेत्रीय भाषाओं में गुज्जर या गूजर उच्चारण किया जाता था।

3- निस्संदेह गुर्जर मूलतः क्षत्रिय थे।

4- राणा केवल गुर्जरों की उपाधि थी। जब पूरा उपमहाद्वीप विदेशियों ने जीत लिया, सब घर बैठ गए। केवल गुर्जर थे जो सैकड़ों वर्षों तक विदेशियों के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। माननीय के0एम0 मुंशी लिखते हैं कि 1200 ई0 से 1600 ई0 तक गुर्जरों का प्रतिरोध का काल है। 1300 ई0 के पश्चात विदेशियों का प्रतिरोध असंगठित रूप से किया गया। तुगलक शासन के प्रारम्भ में, गुर्जरों ने दिल्ली का घेरा डाल लिया। फरिश्ता लिखता है कि दिल्ली के दरवाजे सायंकाल बंद हो जाते थे तथा प्रातःकाल खुलते थे। अटक तथा दिल्ली के बीच सड़क बन्द थी। गुर्जर उस पर किसी को चलने नहीं देते थे। उस समय के प्रसिद्ध संत हजरत निजामुद्दीन औलिया ने कहा था, "दिल्ली में रहेंगे गुज्जर, वरना रहेगी उज्जड़" सुलतान ने आदेश कर रखा था कि जहाँ कहीं भी गुज्जर मिलें, उसे मार डाला जाए। एक और कहावत प्रचलित हुई, "गुज्जर ते उज्जड़ भली, उज्जड़ ते भली उजाड़, जहाँ गुज्जर देखिए, वहीं दीजिए मार।" (देखिए एस आर एच पृष्ठ 86) पूरी 14 वीं सदी के दौरान अटक से व्यास तक पश्चिम पंजाब में गुर्जर राणा या स्वतंत्रता सेनानी अपने देश को आजाद कराने के लिए लड़ते रहें उनमें सुक्खा, सीखा, जसरत व कमल प्रमुख राणा थे। 1540 ई0 में शेरशाह ने गंगा यमुना के ऊपरी दोआब के गुर्जरों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही की। उसने गुर्जरों को मेवात व गुडगाँव से निकाल दिया (देखिए ई0 डी खंड-4 पृष्ठ 477 जी आई पृष्ठ 234)। अब हम अंग्रेजी राज की बात करते हैं। 1785 ई0 में मि.जेम्स स्किनर लिखता है, "सियोदा किला जीतने के पश्चात मैं चम्बल नदी के किनारे घूरिया बस्ती पहुँचा। इस स्थान का गुर्जर क्षत्रिय राजा रामपाल सिंह बहुत बहादुर है। वह हमारी सेना के साथ बड़ी वीरता से लड़ा। मेरा भाई उसकी गोली से मर गया। मैं बड़ी मुश्किल से उसको जीतने में सफल हुआ।" 1824 ई0 में मेरठ व अम्बाला के गुर्जरों ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह की योजना बनाई। योजना का समय से पहले अंग्रेजों को पता चल गया तथा उनकी सेना ने

सहारनपुर के निकट कुंजा बहादुरपुर के किले को घेर लिया। वहाँ गुर्जर लड़ते-2 मर गए तथा किले को मिट्टी में मिला दिया गया। 1857 ई0 में जुनैदपुर के राव दरगाही सिंह, अट्टा व असवार के राव इंद्रजीत और कान्हा सिंह, रायपुर के राव हरजीत सिंह, नूरपुर के राव बक्स, नरोजपुर के राणा मौहम्म्द सचल तथा बूढ़ढ़ाखेड़ा (निकट गंगोह) के राजा फतेह मौहम्म्द बटार, लड़ते-2 मर गए। नरोजपुर की रियासत अंग्रेजों ने एक मुखबिर घसीटा रांघड़ को दे दी। जिसका प्रपौता 1947 में नवाब जमशेद अली खान राजपूत हुआ है।

1857 ई0 के पश्चात गुर्जरों के लिए राणा व राव की उपाधि पर प्रतिबंध लग गया। गुर्जरों को अपराधी सूची में सम्मिलित कर लिया तथा अंग्रेजों ने उनकी सरकारी नौकरी देने पर पाबंदी लगा दी। दूसरी ओर जिन्होंने अंग्रेजों की सहायता की, उनको राणा व राव की उपाधियाँ दी। इस प्रकार इस देश के राणाओं को अपराधी लिख दिया गया तथा गैर राणाओं को राणा की उपाधि से विभूषित किया गया। राजपूतों के इतिहासकार कर्नल टाड ने 1805 ई0 व 1829 ई0 के दौरान एक पुस्तक 'एनाल्स एण्ड़ एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान' लिखी। ये दो खण्ड़ों में कभी राजपूत परिवारों का विस्तृत विवरण है। कर्नल जेम्स टाड ने राजपूतों की सीथियन लोगों से उत्पत्ति का सिंद्धात देकर उन्हें स्केंडेनेविश व जर्मनी के लोगों का भाई बना दिया। इस कहानी को छोड़कर कर्नल टाड ने अपना लेखन कार्य राजपूतों के बयानों तथा उनके लिखित अभिलेखों के आधार पर ही किया है। यह पुस्तक बहुत कीमती है। सूरजमल मिशन (1816 ई0 1869 ई0) ने अपनी पुस्तक 'वंश भास्कर' में राजपूतों को प्राचीन क्षत्रियों से जोड़ दिया। एक इतिहासकार मेवाड़ के कविराज श्यामल दास को महाराणा सज्जन सिंह ने राजपूत इतिहास लिखने का कार्य सौंपा तथा उसको एक लाख रूपया दे दिया। उसने 'वीर विनोद' नाम से 1871 ई0 में मेवाड़ का इतिहास लिखा तथा सिसोदिया परिवार को श्री रामचन्द्र जी से जोड़ दिया। राजपूतों के दावे ऐतिहासिक व पुरातात्विक तथ्यों व पुरानी समकालीन पुस्तकों के आगे न टिक सके। माननीय मि0 ओझा ने भी राजपूतों को गुर्जरों से अलग करने का प्रयास किया। उनके लंगड़े तर्कों पर पहले विचार हो चुका है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि राजपूत छोटी जाति की स्त्रियों से गुर्जरों की संतान है। हिंदू नियमों के अनुसार दूसरी जाति में विवाह करना मना था। अब मैं मुसलमान के नाते कह सकता हूँ कि एक व्यक्ति दुनिया में किसी भी लड़की से विवाह कर सकता है। वर्तमान शेख, सैयद, मुगल व तुर्क पूरे उपमहाद्वीप में उनके विदेशी दादाओं की भारतीय पत्नियों के वंशज हैं। हुसैनी सैयद, हजरत इमाम हुसैन की ईरानी पत्नी के वंशज है तथा अल्वी सैयद, हजरत फातिमा के अतिरिक्त हजरत अली की दूसरी पत्नियों से उनके वंशज है। यह सब आदरणीय हैं। राजपूत ऐसी स्त्रियों के वंशज हैं जो इसी देश, इसी धर्म व इसी आर्य रक्त से सम्बंधित थी। अतः राजपूत गुर्जरों के भाई हैं। श्रीमती इंदिरा गाँधी ब्राह्मणी थी तथा एक फारसी फिरोज गाँधी से ब्याही थी, उसके बच्चे वर्तमान में हिंदुओं के लिए आदरणीय है। वास्तव में राजपूत जाति गुर्जर जाति की ही एक शाखा है।

1956 ई0 में मध्य प्रदेश के निमाच शहर के एक ब्राह्मण किशोरी लाल ने कुछ पर्चे बाँटे जिसमें लिखा था कि राजपूतों ने लिखित में यह घोषणा की है कि राजपूत गुर्जरों की संतान है। इस आधार पर उन्होंने आम

चुनाव में गुर्जरों का साथ दिया। चुनाव आयोग ने इसके ऊपर आपत्ति की। राजा मौहम्म्द आरिफ राजपूत मिनहास ने लिखा, "कन्नौज के शासक गुर्जर प्रतिहार थे।" (देखिए तारीख-ए-राजपूताना)

साभार-

यह गधांश "गुर्जरों का संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक से लिया गया है जिसके लेखक राणा अली हसन चौहान हैं।

****